

साथ - साथ मनीगत्यात्मक विकास भी होता है ; जिसमें बच्चों के स्थूल गत्यात्मक कौशल तथा सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल सम्मिलित है ।

Unit-3: बच्चों में सृजनात्मकता

सृजनात्मकता : अवधारणा , बच्चों के संदर्भ में विशेष महत्त्व सृजनात्मकता एक विशेष ढंग से चिंतन करने का तरीका होता है जिसे सृजनात्मक चिंतन कहा जाता है ।

सृजनात्मकता व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिससे वह कुछ ऐसी नई चीजों , रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है एवं जो पहले से उसे ज्ञात नहीं होता । यह एक काल्पनिक क्रिया है या चिंतन संश्लेषण ही सकता है । बच्चों के संदर्भ में सृजनात्मकता के महत्व -

जिज्ञासु , स्वपेदनशीलता , अनुशासन , समस्या समाधान के नए तरीकों से ढूँढना , समस्याओं का पूर्णतया करना , उत्तरदायित्व पूर्ण ढंग से काम करना , अपने विचारों से दूसरों को प्रभावित करना , अग्रसौची , खुसमिजाज या हास्यप्रिय इत्यादि

• बच्चों में सृजनात्मकता विकास हेतु विविध तरीके सूचनाएँ एकत्रित करना - बालकों को कोई विषय देकर विषय से सम्बंधित सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए कहा जाता है जैसे - इतिहास के पाठ में विदेशी आक्रमण कार्यों का सामना करने वाले इतिहासिक पुरुष और महिलाओं का नाम लिखिए ।

2. समस्या समाधान के लिए प्रोत्साहित करना - विद्यालय के सामने प्रायः कई प्रकार की समस्याएँ आती हैं जैसे विद्यालय में हस्ताल

अनुशासनहीनता, साफ-सफाई की समस्या आदि।
विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया
जा सकता है कि वे समस्या समाधान के
लिए अपने सुझाव प्रस्तुत करें।

3. समस्या के भावी परिणामों का विश्लेषण करना -
विद्यार्थियों के सामने कई समस्या रखकर उनके
परिणामों पर अच्छी से विचार जाना जा सकता है
जैसे - देश में सरकार या व्यवस्था बदलने पर
समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

4. ऑकड़ी का वर्गीकरण एवं अन्वेषण - विद्यार्थियों को
विज्ञान साहित्य संबंधित कुछ ऑकड़े देकर उनका
वर्गीकरण करने के लिए कहा जा सकता है
साथ ही साथ अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित
किया जा सकता है।

• सृजनत्मकता : प्रभावित करने वाले कारक
→ सृजनत्मकता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक -
संतुष्टि का मिलना, असंतुष्टि, पुरस्कार - निन्दा,
सफलता - असफलता, स्वास्थ्य, विकलांगता,
बुद्धि, शिक्षक, कला का वातावरण एवं
शिक्षण विधि, अनुशासन इत्यादि। है।